IMPACT FACTOR 7.50 (SJIAI)

बिहार शोध समागम
BIHAR SHODH SAMAAGAM

Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 4, Issue 3 July-September, 2026
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
https://doi.org/10.5281/zenodo.22942350

ISSN : 3048-6971

# भारतीय आर्य भाषा परिवार की भाषाओं का सामान्य परिचय एवं उनका क्षेत्रीय विभाजन

**तनुज राज**
**शोधार्थी, हिंदी विभाग,दिल्ली विश्वविद्यालय-07**

भारतीय भाषाओं का अध्ययन भारतीय समाज, संस्कृति, इतिहास और साहित्य की संरचना को समझने की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। भारत में अनेक भाषा-परिवारों की भाषाएँ प्रचलित हैं, जिनमें भारतीय-आर्य, द्रविड़, ऑस्ट्रो-एशियाई तथा तिब्बती-बर्मी भाषा-परिवार प्रमुख हैं। इनमें भारतीय-आर्य भाषा परिवार का स्थान विशेष महत्त्वपूर्ण है। हिंदी, बंगाली, मराठी, गुजराती, पंजाबी, असमिया, ओड़िया, नेपाली, सिंधी, कश्मीरी, मैथिली, भोजपुरी तथा अनेक अन्य भाषाएँ और भाषिक रूप इसी व्यापक परिवार से संबद्ध हैं। भारतीय-आर्य भाषाओं का भौगोलिक विस्तार अत्यंत व्यापक है और उत्तर-पश्चिम में कश्मीर तथा सिंध क्षेत्र से लेकर पूर्व में असम और दक्षिण में महाराष्ट्र तथा दक्कन के विभिन्न क्षेत्रों तक इसकी भाषिक उपस्थिति दिखाई देती है। जॉर्ज ए. ग्रियर्सन द्वारा तैयार भारतीय भाषाओं के सर्वेक्षण में भारतीय-आर्य भाषाओं के इसी व्यापक भौगोलिक विस्तार को मानचित्र के माध्यम से प्रस्तुत किया गया था।[1]

भारतीय-आर्य भाषा परिवार को समझने के लिए उसके ऐतिहासिक विकास को ध्यान में रखना आवश्यक है। यह परिवार भारोपीय भाषा परिवार की भारतीय शाखा है। इसके ऐतिहासिक विकास को सामान्यतः तीन व्यापक अवस्थाओं में समझा जाता है—प्राचीन भारतीय-आर्य, मध्य भारतीय-आर्य और नवीन भारतीय-आर्य। प्राचीन भारतीय-आर्य अवस्था का प्रतिनिधित्व मुख्यतः वैदिक संस्कृत और संस्कृत करती हैं। मध्य भारतीय-आर्य अवस्था में पालि, प्राकृत और अपभ्रंश जैसे भाषिक रूपों का विकास हुआ। नवीन भारतीय-आर्य अवस्था में हिंदी, बंगाली, मराठी, गुजराती, पंजाबी, असमिया, ओड़िया, नेपाली, सिंधी आदि आधुनिक भाषाओं का विकास हुआ। इस प्रकार आधुनिक भारतीय-आर्य भाषाएँ किसी एक भाषा से अचानक उत्पन्न नहीं हुईं, बल्कि दीर्घकालीन भाषिक परिवर्तन की प्रक्रिया से निर्मित हुई हैं।[2]

वैदिक संस्कृत भारतीय-आर्य भाषाओं की प्राचीनतम प्रमाणित अवस्था का महत्त्वपूर्ण प्रतिनिधित्व करती है। ऋग्वेद की भाषा इस दृष्टि से विशेष महत्त्व रखती है। वैदिक भाषा के पश्चात संस्कृत ने एक अधिक व्यवस्थित और मानकीकृत रूप ग्रहण किया। पाणिनि के व्याकरण ने संस्कृत की संरचना को व्यवस्थित करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। संस्कृत का प्रयोग धार्मिक ग्रंथों के अतिरिक्त दर्शन, साहित्य, नाटक, व्याकरण, राजनीति, चिकित्सा और अन्य ज्ञान-विधाओं में हुआ। किंतु लोक-व्यवहार में प्रयुक्त भाषिक रूप संस्कृत से अलग-अलग दिशाओं में विकसित होते रहे। इन्हीं लोकाभिमुख भाषिक प्रवृत्तियों ने आगे चलकर मध्य भारतीय-आर्य भाषाओं के विकास की भूमि तैयार की। भारतीय-आर्य भाषाओं के ऐतिहासिक विकास, उनके आनुवंशिक संबंधों तथा भारतीय उपमहाद्वीप में उनके प्रसार को समझने के लिए ऐतिहासिक और तुलनात्मक भाषाविज्ञान का विशेष महत्त्व है।[3]

मध्य भारतीय-आर्य अवस्था भारतीय भाषा-इतिहास की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। पालि और प्राकृत भाषाओं का प्रयोग बौद्ध तथा जैन साहित्य में व्यापक रूप से हुआ। शौरसेनी, महाराष्ट्री, मागधी और अर्धमागधी जैसे प्राकृत रूपों का साहित्यिक और सांस्कृतिक महत्त्व रहा। इसके बाद अपभ्रंश भाषिक अवस्था आती है। अपभ्रंश को आधुनिक भारतीय-आर्य भाषाओं के विकास की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कड़ी माना जाता है। इस विकासक्रम में ध्वनि, शब्द-रचना, रूप-विन्यास और वाक्य-विन्यास में निरंतर परिवर्तन होते रहे। इसलिए आधुनिक भारतीय-आर्य भाषाओं का

विकास किसी एक निश्चित तिथि या घटना से नहीं जोड़ा जा सकता; यह अनेक शताब्दियों में घटित क्रमिक भाषिक परिवर्तन का परिणाम है।[4]

आधुनिक भारतीय-आर्य भाषाओं की संरचना अत्यंत विविध है। कुछ भाषाएँ बड़ी जनसंख्या द्वारा बोली जाती हैं और उनका साहित्यिक तथा प्रशासनिक प्रयोग व्यापक है, जबकि कुछ भाषाएँ अपेक्षाकृत सीमित क्षेत्र में बोली जाती हैं। भाषावैज्ञानिक दृष्टि से भाषा और बोली का विभाजन भी हमेशा सरल नहीं होता। किसी भाषिक रूप को भाषा या बोली मानने में उसकी संरचना के साथ-साथ साहित्यिक परंपरा, मानकीकरण, शिक्षा, प्रशासन, राजनीतिक पहचान और भाषिक समुदाय की भूमिका होती है। हिंदी क्षेत्र में ब्रजभाषा, अवधी, भोजपुरी, बुंदेली, बघेली, छत्तीसगढ़ी, हरियाणवी और अन्य भाषिक रूपों का संबंध इसी जटिल प्रश्न से है। अतः भारतीय-आर्य भाषाओं के क्षेत्रीय विभाजन को कठोर सीमाओं के रूप में नहीं, बल्कि भाषिक निरंतरता के रूप में देखना अधिक उपयुक्त है।[5]

भारतीय-आर्य भाषाओं के क्षेत्रीय विभाजन के अध्ययन में जॉर्ज ए. ग्रियर्सन का *भारतीय भाषाओं का सर्वेक्षण* विशेष महत्त्व रखता है। ग्रियर्सन ने भारत के विभिन्न भाषिक क्षेत्रों का व्यापक सर्वेक्षण कर भाषाओं, बोलियों और उनके भौगोलिक विस्तार का विवरण प्रस्तुत किया। उनके परिचयात्मक खंड में भारतीय-आर्य भाषाओं का एक विस्तृत मानचित्र दिया गया है, जिसमें भारतीय-आर्य परिवार को बाह्य, आंतरिक और मध्य उपशाखाओं के रूप में प्रदर्शित किया गया था। यह मानचित्र भारतीय-आर्य भाषाओं के विशाल क्षेत्र को समझने के लिए ऐतिहासिक रूप से महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है।[6]

उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र भारतीय-आर्य भाषाओं की दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण भाषिक क्षेत्र है। इस क्षेत्र में पंजाबी, सिंधी और कश्मीरी जैसी भाषाओं का विशेष उल्लेख किया जा सकता है। पंजाबी का प्रमुख क्षेत्र पंजाब है। इसकी अपनी विशिष्ट ध्वन्यात्मक और व्याकरणिक विशेषताएँ तथा समृद्ध साहित्यिक परंपरा है। गुरुमुखी लिपि के कारण पंजाबी की एक विशिष्ट लेखन-परंपरा विकसित हुई, जबकि ऐतिहासिक रूप से दूसरी लिपियों का भी प्रयोग मिलता है। सिंधी का प्रमुख भाषिक क्षेत्र सिंध है, यद्यपि भारत में सिंधी भाषी समुदाय अनेक प्रदेशों में निवास करता है। कश्मीरी का संबंध मुख्यतः कश्मीर घाटी से है और इसकी भाषिक संरचना उत्तर-पश्चिमी हिमालयी संपर्क-क्षेत्र से जुड़ी हुई है। ग्रियर्सन के सर्वेक्षण में उत्तर-पश्चिमी भारतीय-आर्य भाषाओं के लिए स्वतंत्र सामग्री उपलब्ध होती है।[7]

पश्चिमी भारतीय-आर्य क्षेत्र में गुजराती, राजस्थानी भाषिक रूप, मराठी और कोंकणी जैसी भाषाओं का महत्त्व है। गुजराती का प्रमुख क्षेत्र गुजरात है और इसकी समृद्ध साहित्यिक परंपरा रही है। राजस्थानी क्षेत्र में मारवाड़ी, मेवाड़ी, जयपुरी आदि अनेक भाषिक रूपों का उल्लेख किया जाता है। इन भाषिक रूपों में पारस्परिक समानताएँ हैं, किंतु स्थानीय परिस्थितियों के कारण इनके ध्वन्यात्मक, शब्दावलीगत और व्याकरणिक स्वरूपों में भिन्नताएँ भी हैं। मराठी का प्रमुख क्षेत्र महाराष्ट्र है और इसकी साहित्यिक परंपरा में संत साहित्य से लेकर आधुनिक साहित्य तक अनेक महत्त्वपूर्ण चरण दिखाई देते हैं। कोंकणी पश्चिमी तटीय क्षेत्र की एक महत्त्वपूर्ण भाषा है, जिसके अनेक क्षेत्रीय रूप तथा लेखन-परंपराएँ मिलती हैं।

मध्य भारतीय-आर्य क्षेत्र में हिंदी और उससे संबद्ध अनेक भाषिक रूपों का व्यापक विस्तार है। आधुनिक मानक हिंदी का विकास मुख्यतः खड़ी बोली के आधार पर हुआ, किंतु हिंदी के व्यापक भाषिक क्षेत्र में अनेक क्षेत्रीय भाषाएँ और बोलियाँ विद्यमान हैं। पश्चिमी हिंदी के अंतर्गत खड़ी बोली, ब्रजभाषा, हरियाणवी, बुंदेली और कन्नौजी जैसे रूपों का उल्लेख किया जाता है। पूर्वी हिंदी में अवधी, बघेली और छत्तीसगढ़ी आदि का उल्लेख मिलता है। बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश में भोजपुरी, मगही और मैथिली का महत्त्व है। इस प्रकार हिंदी क्षेत्र स्वयं अत्यंत व्यापक और भाषिक दृष्टि से बहुस्तरीय है। आधुनिक भारतीय-आर्य भाषाओं की सूची और उनके वर्गीकरण में इस विविधता को विशेष रूप से देखा जा सकता है।[8]

हिंदी क्षेत्र का भाषिक विकास भारतीय साहित्य के इतिहास से भी गहरे रूप में जुड़ा हुआ है। ब्रजभाषा ने कृष्णभक्ति और रीतिकाव्य को समृद्ध किया। अवधी ने रामकाव्य तथा सूफी प्रेमाख्यान की अभिव्यक्ति के लिए महत्त्वपूर्ण माध्यम का कार्य किया। मैथिली में विद्यापति की पदावली ने प्रेम और भक्ति की विशिष्ट काव्य परंपरा को विकसित किया। भोजपुरी और अन्य लोकभाषिक रूपों में लोकगीत, लोककथा और लोकनाट्य की समृद्ध परंपराएँ विकसित हुईं। इससे स्पष्ट होता है कि भाषिक क्षेत्र केवल भौगोलिक इकाई नहीं होता, बल्कि वह साहित्यिक और सांस्कृतिक पहचान से भी निर्मित होता है।

पूर्वी भारतीय-आर्य क्षेत्र में बंगाली, असमिया और ओड़िया प्रमुख भाषाएँ हैं। बंगाली का विकास पूर्वी भारत में हुआ और इसकी साहित्यिक परंपरा अत्यंत समृद्ध रही है। वैष्णव साहित्य, मंगलकाव्य तथा आधुनिक बंगाली साहित्य इसके विभिन्न विकास-चरणों को सामने रखते हैं। असमिया का प्रमुख क्षेत्र असम है और शंकरदेव की वैष्णव परंपरा ने इसके साहित्यिक विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। ओड़िया का प्रमुख क्षेत्र ओडिशा है और इसकी भी दीर्घ साहित्यिक परंपरा रही है। इन भाषाओं में ऐतिहासिक समानताएँ होने के बावजूद स्थानीय भाषिक परिस्थितियों के कारण इनके स्वतंत्र स्वरूप विकसित हुए।[9]

बिहार तथा उससे लगे क्षेत्रों में मैथिली, मगही और भोजपुरी का विशेष महत्त्व है। मैथिली की प्राचीन साहित्यिक परंपरा है और विद्यापति इसके सर्वाधिक प्रसिद्ध कवियों में हैं। भोजपुरी का भाषिक क्षेत्र बिहार के पश्चिमी भागों तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश तक फैला हुआ है और प्रवास के कारण इसका विस्तार भारत के बाहर भी हुआ है। मगही का प्रमुख क्षेत्र बिहार है। इन भाषाओं को केवल किसी एक मानक भाषा की उपबोलियाँ मानना उनके स्वतंत्र साहित्यिक और सामाजिक अस्तित्व की पूरी व्याख्या नहीं करता। भाषावैज्ञानिक वर्गीकरण में इनके पारस्परिक संबंधों के साथ इनके विशिष्ट स्वरूपों को भी ध्यान में रखना आवश्यक है।

हिमालयी क्षेत्र में नेपाली तथा अनेक पहाड़ी भाषिक रूपों का विकास हुआ है। नेपाली भारतीय-आर्य परिवार की एक प्रमुख आधुनिक भाषा है और भारत तथा नेपाल दोनों में इसका व्यापक प्रयोग होता है। भारत में सिक्किम, दार्जिलिंग और उत्तराखंड के विभिन्न क्षेत्रों में इसका विशेष महत्त्व है। हिमालयी क्षेत्र की भौगोलिक परिस्थितियों के कारण यहाँ अनेक छोटे भाषिक समुदाय और संक्रमण क्षेत्र पाए जाते हैं। इसलिए इस क्षेत्र का भाषिक विभाजन केवल प्रशासनिक सीमाओं के आधार पर नहीं किया जा सकता।

भारतीय-आर्य भाषाओं के विकास में भाषिक संपर्क की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। भारतीय उपमहाद्वीप में भारतीय-आर्य भाषाओं का संपर्क द्रविड़, ऑस्ट्रो-एशियाई तथा तिब्बती-बर्मी भाषाओं से हुआ। इसके अतिरिक्त फारसी, अरबी, तुर्की और अंग्रेजी जैसी भाषाओं से भी भारतीय-आर्य भाषाओं का व्यापक संपर्क रहा। इस संपर्क का प्रभाव शब्दावली, ध्वनि, वाक्य-विन्यास और शैली के स्तर पर दिखाई देता है। हिंदी और उर्दू की शब्दावली इसका स्पष्ट उदाहरण है। पंजाबी, बंगाली, मराठी और अन्य भाषाओं में भी विभिन्न ऐतिहासिक संपर्कों से प्राप्त शब्द मिलते हैं। भारतीय-आर्य भाषाओं के विकास को समझने के लिए इन संपर्कों को अनदेखा नहीं किया जा सकता।[10]

ध्वन्यात्मक दृष्टि से भारतीय-आर्य भाषाओं में कई समानताएँ और भिन्नताएँ दिखाई देती हैं। अल्पप्राण और महाप्राण व्यंजन, दंत्य और मूर्धन्य ध्वनियाँ, नासिक्य ध्वनियाँ तथा विभिन्न स्वर-व्यवस्थाएँ इन भाषाओं की संरचना को विशिष्ट बनाती हैं। संस्कृत और प्राकृत की ऐतिहासिक विरासत के साथ-साथ क्षेत्रीय संपर्कों ने आधुनिक भाषाओं की ध्वनि-व्यवस्था को प्रभावित किया। विभिन्न आधुनिक भाषाओं में प्राचीन ध्वनियों का संरक्षण, परिवर्तन या लोप अलग-अलग प्रकार से हुआ है। आधुनिक भारतीय-आर्य भाषाओं के ध्वन्यात्मक अध्ययन में इन परिवर्तनों का तुलनात्मक विश्लेषण विशेष महत्त्व रखता है।[11]

व्याकरणिक स्तर पर भी आधुनिक भारतीय-आर्य भाषाओं में प्राचीन भारतीय-आर्य भाषाओं की तुलना में पर्याप्त परिवर्तन हुए हैं। संस्कृत की विभक्ति-प्रधान व्यवस्था की अपेक्षा आधुनिक भाषाओं में परसर्गों का प्रयोग अधिक प्रमुख हो गया है। हिंदी में 'को', 'से', 'का', 'के', 'की', 'में' और 'पर' जैसे परसर्ग इसका उदाहरण हैं। इसी प्रकार क्रिया-रूपों में काल, पक्ष और भाव को व्यक्त करने के लिए सहायक क्रियाओं तथा विभिन्न संरचनाओं का प्रयोग होता है। संज्ञा और सर्वनाम के रूपों में भी ऐतिहासिक परिवर्तन दिखाई देते हैं। आधुनिक भारतीय-आर्य भाषाओं के नाम-पद और क्रिया-पद संबंधी अध्ययन से इन परिवर्तनों का विस्तृत ज्ञान प्राप्त होता है।[12]

शब्दावली की दृष्टि से आधुनिक भारतीय-आर्य भाषाएँ बहुस्तरीय हैं। इनमें संस्कृत से सीधे लिए गए शब्द, संस्कृत से प्राकृत और अपभ्रंश के माध्यम से विकसित शब्द, देशज शब्द तथा संपर्क भाषाओं से आए आगत शब्द मिलते हैं। हिंदी में तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशी शब्दों का सह-अस्तित्व इसकी शब्द-संपदा की विविधता को प्रदर्शित करता है। बंगाली, मराठी, गुजराती, पंजाबी तथा अन्य आधुनिक भाषाओं में भी इसी प्रकार विभिन्न ऐतिहासिक स्रोतों से शब्द आए हैं। इस प्रकार शब्दावली किसी भाषा के इतिहास, संपर्क और सामाजिक परिवर्तन की महत्त्वपूर्ण साक्षी होती है।

लिपि भी भारतीय-आर्य भाषाओं के क्षेत्रीय विभाजन का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष है। देवनागरी, गुरुमुखी, बंगाली-असमिया, गुजराती, ओड़िया और अन्य लिपियों का प्रयोग विभिन्न भाषिक क्षेत्रों में हुआ है। एक ही भाषा के लिए अलग-अलग ऐतिहासिक परिस्थितियों में एक से अधिक लिपियों का प्रयोग भी मिलता है। इसलिए भाषा और लिपि को एक-दूसरे का पर्याय नहीं माना जा सकता। भाषा मौखिक और सामाजिक संप्रेषण की व्यवस्था है, जबकि लिपि उसके लिखित रूप को अभिव्यक्त करने की प्रणाली है।

भारतीय-आर्य भाषाओं का क्षेत्रीय विभाजन राजनीतिक सीमाओं से पूरी तरह निर्धारित नहीं होता। आधुनिक राज्यों की सीमाएँ भाषिक क्षेत्रों के साथ हमेशा समान नहीं हैं। एक ही भाषा कई राज्यों में बोली जा सकती है और एक राज्य में अनेक भाषाएँ तथा भाषिक रूप पाए जा सकते हैं। सीमा क्षेत्रों में द्विभाषिकता और बहुभाषिकता सामान्य सामाजिक परिस्थिति है। इसलिए भाषिक क्षेत्र को समझने के लिए भौगोलिक स्थिति के साथ प्रवास, व्यापार, शिक्षा, प्रशासन, साहित्य और सांस्कृतिक संपर्क को भी ध्यान में रखना आवश्यक है।

भारतीय-आर्य भाषाओं के वर्गीकरण में आधुनिक भाषावैज्ञानिक अध्ययनों ने ऐतिहासिक सर्वेक्षणों को अधिक वैज्ञानिक और तुलनात्मक दृष्टि प्रदान की है। आधुनिक भारतीय-आर्य भाषाओं की सूची, उनके क्षेत्रीय वितरण तथा उनके वर्गीकरण का विस्तृत विवेचन कॉलिन पी. मैसिका ने किया है। उनके अध्ययन में आधुनिक भाषाओं के साथ-साथ भाषा और बोली के संबंध, ऐतिहासिक विकास, ध्वन्यात्मक संरचना, शब्द-संपदा, रूप-विज्ञान और वाक्य-विन्यास का भी अध्ययन किया गया है। इससे भारतीय-आर्य भाषाओं को केवल भौगोलिक समूहों के रूप में नहीं, बल्कि ऐतिहासिक और संरचनात्मक संबंधों के आधार पर समझने में सहायता मिलती है।[13]

भारतीय-आर्य भाषाओं की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता उनका निरंतर परिवर्तनशील स्वरूप है। नगरीकरण, शिक्षा, औद्योगीकरण, प्रवास, मुद्रण, रेडियो, दूरदर्शन, सिनेमा और आधुनिक संचार माध्यमों ने भाषाओं के पारस्परिक संपर्क को तीव्र किया है। आज अनेक लोग एक से अधिक भाषाओं का प्रयोग करते हैं और एक ही व्यक्ति अलग-अलग सामाजिक परिस्थितियों में अलग-अलग भाषिक रूपों का उपयोग कर सकता है। इससे भारतीय-आर्य भाषाओं के बीच संपर्क और प्रभाव निरंतर बढ़ रहा है। मानक भाषाओं के विस्तार के साथ-साथ क्षेत्रीय भाषाओं और बोलियों की सांस्कृतिक उपस्थिति भी बनी हुई है।

भारतीय-आर्य भाषाओं के क्षेत्रीय विभाजन को मोटे तौर पर उत्तर-पश्चिमी, पश्चिमी, मध्य, पूर्वी और हिमालयी क्षेत्रों में समझा जा सकता है। उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में पंजाबी, सिंधी और कश्मीरी जैसी भाषाएँ आती हैं; पश्चिमी क्षेत्र में गुजराती, राजस्थानी भाषिक रूप, मराठी और कोंकणी का महत्त्व है; मध्य क्षेत्र में हिंदी तथा उससे संबद्ध अनेक भाषिक रूप हैं;

पूर्वी क्षेत्र में बंगाली, असमिया और ओड़िया प्रमुख हैं; बिहार क्षेत्र में मैथिली, मगही और भोजपुरी का विशेष महत्त्व है; जबकि हिमालयी क्षेत्र में नेपाली और अनेक पहाड़ी भाषिक रूप मिलते हैं। यह विभाजन सुविधाजनक अध्ययन-प्रणाली है, लेकिन इसे पूर्ण और स्थिर सीमा के रूप में नहीं समझना चाहिए। भाषाओं के बीच संक्रमण और संपर्क के क्षेत्र लगातार बने रहते हैं।[14]

इस प्रकार भारतीय-आर्य भाषा परिवार भारतीय भाषिक संरचना का अत्यंत महत्त्वपूर्ण अंग है। इसका विकास वैदिक संस्कृत से आधुनिक भाषाओं तक एक दीर्घ ऐतिहासिक प्रक्रिया के रूप में हुआ है। पालि, प्राकृत और अपभ्रंश ने इस विकास में मध्यवर्ती भूमिका निभाई। आधुनिक भारतीय-आर्य भाषाएँ अपनी-अपनी क्षेत्रीय, सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों में विकसित हुई हैं, इसलिए उनमें एक ओर ऐतिहासिक समानताएँ हैं तो दूसरी ओर पर्याप्त विविधता भी है। हिंदी, बंगाली, मराठी, गुजराती, पंजाबी, असमिया, ओड़िया, नेपाली, सिंधी, कश्मीरी, मैथिली, भोजपुरी तथा अन्य भाषाएँ भारतीय-आर्य परिवार की व्यापकता और विविधता को अभिव्यक्त करती हैं। इन भाषाओं का अध्ययन केवल भाषावैज्ञानिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि भारतीय साहित्य, संस्कृति, इतिहास और समाज को समझने के लिए भी आवश्यक है।

भारतीय-आर्य भाषाओं के क्षेत्रीय विभाजन का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि भाषा और भूगोल का संबंध अत्यंत गहरा है, किंतु यह संबंध स्थिर और सरल नहीं है। भाषाएँ राजनीतिक सीमाओं से परे जाती हैं, समुदायों के प्रवास के साथ नए क्षेत्रों में पहुँचती हैं और अन्य भाषाओं के संपर्क में आकर अपने स्वरूप में परिवर्तन करती हैं। इसलिए भारतीय-आर्य भाषाओं का अध्ययन ऐतिहासिक, भौगोलिक, सामाजिक और तुलनात्मक—सभी दृष्टियों से किया जाना चाहिए। ग्रियर्सन का सर्वेक्षण इस अध्ययन की ऐतिहासिक आधारभूमि प्रस्तुत करता है, जबकि आधुनिक भाषावैज्ञानिक अध्ययनों ने भाषाओं के संबंध और वर्गीकरण को अधिक व्यापक संरचनात्मक दृष्टि प्रदान की है।[15]

अंततः कहा जा सकता है कि भारतीय-आर्य भाषा परिवार केवल भाषाओं का एक समूह नहीं है, बल्कि भारतीय सभ्यता के दीर्घ भाषिक विकास का साक्षी है। इसकी भाषाओं में भारतीय इतिहास की अनेक परतें, सांस्कृतिक संपर्क, धार्मिक और साहित्यिक आंदोलनों की स्मृतियाँ तथा आधुनिक सामाजिक परिवर्तन सुरक्षित हैं। इनके क्षेत्रीय विभाजन का अध्ययन भारतीय बहुभाषिकता की प्रकृति को समझने का महत्त्वपूर्ण साधन है। भारतीय-आर्य भाषाओं की विविधता में निहित ऐतिहासिक एकता और क्षेत्रीय विशिष्टता दोनों भारतीय भाषिक संस्कृति की मूल विशेषताएँ हैं।

## फुटनोट

१. जॉर्ज ए. ग्रियर्सन, *भारतीय भाषाओं का सर्वेक्षण,* खंड १, भाग १, *परिचय* (कलकत्ता: भारत सरकार का केंद्रीय प्रकाशन विभाग, १९२७), १-२५। ग्रियर्सन के इसी खंड में भारतीय-आर्य भाषाओं का विस्तृत मानचित्र पृष्ठ ११९ के सामने दिया गया है।

२. कॉलिन पी. मैसिका, *भारतीय-आर्य भाषाएँ* (कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय प्रेस, १९९१), ८-२२।

३. मैसिका, *भारतीय-आर्य भाषाएँ,* ३२-३९।

४. मैसिका, *भारतीय-आर्य भाषाएँ,* ४३-६०।

५. मैसिका, *भारतीय-आर्य भाषाएँ,* २३-३१।

६. ग्रियर्सन, *भारतीय भाषाओं का सर्वेक्षण,* खंड १, भाग १, ११९ के सामने का मानचित्र। ग्रियर्सन के मानचित्र में भारतीय-आर्य भाषाओं की बाह्य, आंतरिक और मध्य उपशाखाओं को पृथक रूप से प्रदर्शित किया गया है।

७. जॉर्ज ए. ग्रियर्सन, *भारतीय भाषाओं का सर्वेक्षण,* खंड ८, भाग १, *सिंधी और लहँदा के नमूने* (कलकत्ता: भारत सरकार का मुद्रण विभाग, १९१९); तथा खंड ८, भाग २, *दार्दी या पिशाच भाषाओं के नमूने* (कलकत्ता: भारत सरकार का मुद्रण विभाग, १९१९)। इन दोनों खंडों का प्रकाशन-विवरण उपलब्ध अभिलेखों में दर्ज है।

८. मैसिका, *भारतीय-आर्य भाषाएँ,* ४२०-४४५।

९. मैसिका, *भारतीय-आर्य भाषाएँ,* ८-२२।

१०. मैसिका, *भारतीय-आर्य भाषाएँ,* ३९-४९।

११. मैसिका, *भारतीय-आर्य भाषाएँ,* ८६-१३२।

१२. मैसिका, *भारतीय-आर्य भाषाएँ,* २१२-३३०।

१३. मैसिका, *भारतीय-आर्य भाषाएँ,* ४२०-४६३।

१४. मैसिका, *भारतीय-आर्य भाषाएँ,* ४४६-४६३।

१५. मैसिका, *भारतीय-आर्य भाषाएँ,* ४६४-४७९।

## संदर्भ-सूची

ग्रियर्सन, जॉर्ज ए. *भारतीय भाषाओं का सर्वेक्षण*। खंड १, भाग १, *परिचय*। कलकत्ता: भारत सरकार का केंद्रीय प्रकाशन विभाग, १९२७।

ग्रियर्सन, जॉर्ज ए. *भारतीय भाषाओं का सर्वेक्षण*। खंड ८, भाग १, *सिंधी और लहँदा के नमूने*। कलकत्ता: भारत सरकार का मुद्रण विभाग, १९१९।

ग्रियर्सन, जॉर्ज ए. *भारतीय भाषाओं का सर्वेक्षण*। खंड ८, भाग २, *दार्दी या पिशाच भाषाओं के नमूने*। कलकत्ता: भारत सरकार का मुद्रण विभाग, १९१९।

मैसिका, कॉलिन पी. *भारतीय-आर्य भाषाएँ*। कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय प्रेस, १९९१।

टर्नर, आर. एल. *भारतीय-आर्य भाषाओं का तुलनात्मक शब्दकोश*। लंदन: ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय प्रेस, १९६६।